

संस्कृत में वर्ण

पेज नं० (1)

संस्कृत वर्णमाला में कुल - 50 वर्ण हैं।

① स्वर या अच् - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ए, ऐ, औ, औ → कुल - 13 हैं।

② व्यंजन या हल् - उनकी संख्या 33 हैं। (क से ह तक)

③ अयौगवाह - 4 हैं। अनुस्वार (ं), विसर्ग (ः), णिष्ठापूर्वीय (ँ), उपह्रस्वानीय (ण)

→ व्यंजन वर्णों को 5 भागों में बाँटा गया।

1- कवर्ग - क से इ

2- चवर्ग - च से ऋ

3- टवर्ग - ट से ण

4- तवर्ग - त से न

5- पवर्ग - प से म

5x5 = 25 होते

स्पर्श व्यंजन हैं।

अन्तःस्थ व्यंजन = म, र, ल, व

उद्गम व्यंजन = श, ष, स, ह

वर्णों के उच्चारण स्थान न हैं।

① कण्ठ्य से - कवर्ग, अ, आ, इ, विसर्ग

② तालु से - चवर्ग, ऋ, ए, इ, ई, य, श

③ मूर्धन्य से - टवर्ग, ऋ, ए, ष

④ दन्त्य से - तवर्ग, ल, ल, स

⑤ ओष्ठ से - पवर्ग, उ, ऊ,

⑥ नासिक्य - वर्ण का पाँचवा अक्षर,

⑦ कण्ठतालव्य - ए, ऐ

⑧ कण्ठोष्ठ्य - ओ, औ

⑨ दन्तोष्ठ्य - व

संयुक्त व्यंजन -

* कृ + ष + अ = क्ष, त + र + अ = त्र

* ज + म + अ = ज्ञ

प्रत्याहार -

जिस विधि से वर्ण समुदाय संक्षिप्त कर दिए जाते उसे विधि की प्रत्याहार कहते।

⇒ प्रत्याहारों की संख्या - 14 हैं।

⇒ सर्वप्रथम प्रयोग भगवान शिव ने किया था।

कुछ प्रमुख प्रत्याहार के अन्तर्गत आने वाले वर्ण

अक् = अ, इ, उ, ऋ, ए

अच् = अ, इ, उ, ऋ, ए, ए, ऐ, औ, औ

इक् = इ, उ, ऋ, ए

एच् = ए, औ

चरु = च, ट, त, क, प, श, ष, स

ऐच् = ऐ, औ

BY-Mohit Jaiswal

संख्या - (सरल विधि से)

संस्कृत - 10th Term

2

1- एकः

2- द्वौ/द्वै

3- त्रयः/तीणि

4- चत्वारि

5- पञ्च

6- षट्

7- सप्त

8- अष्ट

9- नव

10- दश

1+30=31 - एकत्रिंशत्

2+30=32 - द्वित्रिंशत्

3+30=33 - त्रयस्त्रिंशत्

4+30=34 - चतुस्त्रिंशत्

5+30=35 - पञ्चत्रिंशत्

6+30=36 - षट्त्रिंशत्

7+30=37 - सप्तत्रिंशत्

8+30=38 - अष्टत्रिंशत्

1-40=39 - स्कोनचत्वारिंशत्

40 = चत्वारिंशत्

1+70 - एकसप्तति

2+70 - द्विसप्तति

3+70 - त्रिसप्तति

4+70 - चतुःसप्तति

5+70 - पञ्चसप्तति

6+70 - षट्सप्तति

7+70 - सप्तसप्तति

8+70 - अष्टसप्तति

1-80 - स्कोनाशीतिः

80 - अशीतिः

1+40=41 - एकचत्वारिंशत्

2+40=42 - द्विचत्वारिंशत्

3+40=43 - त्रिचत्वारिंशत्

4+40=44 - चतुश्चत्वारिंशत्

5+40=45 - पञ्चचत्वारिंशत्

6+40=46 - षट्चत्वारिंशत्

7+40=47 - सप्तचत्वारिंशत्

8+40=48 - अष्टचत्वारिंशत्

1-40=49 - स्कोनपञ्चाशत्

50 = 50 - पञ्चाशत्

1+80 - एकाशीति

2+80 - द्वाशीति

3+80 - त्रयाशीति

4+80 - चतुर्ष्वशीति

5+80 - पञ्चाशीति

6+80 - षड्शीति

7+80 - सप्तशीति

8+80 - अष्टाशीति

1-90 - स्कोननवति

90 - नवति

1+50 - एकपञ्चाशत्

2+50 - द्विपञ्चाशत्

3+50 - त्रिपञ्चाशत्

4+50 - चतुःपञ्चाशत्

5+50 - पञ्चपञ्चाशत्

6+50 - षट्पञ्चाशत्

7+50 - सप्तपञ्चाशत्

8+50 - अष्टपञ्चाशत्

1-60 - स्कोनषष्टि

60 - षष्टि

1+90 - एकनवतिः

2+90 - द्विनवतिः

3+90 - त्रिनवति

4+90 - चतुर्नवति

5+90 - पञ्चनवति

6+90 - षट्नवति

7+90 - सप्तनवति

8+90 - अष्टनवति

1-100 - स्कोनशतम्

100 - शतम्/एकशतम्

1+60 - एकषष्टि

2+60 - द्विषष्टि

3+60 - त्रिषष्टि

4+60 - चतुःषष्टि

5+60 - पञ्चषष्टि

6+60 - षट्षष्टि

7+60 - सप्तषष्टि

8+60 - अष्टषष्टि

1-70 - स्कोनसप्तति

70 - सप्तति

1000 - सहस्रम्

10,000 - अयुतम्

100000 - लक्षम्

1+10=11 - एकादश

2+10=12 - द्वादश

3+10=13 - त्रयोदश

4+10=14 - चतुर्दश

5+10=15 - पञ्चदश

6+10=16 - षोडश

7+10=17 - सप्तदश

8+10=18 - अष्टदश

1+20=19 - स्कोनविंशति

20 = 20 - विंशतिः

1+20=21 - एकविंशति

2+20=22 - द्वविंशति

3+20=23 - त्रयोविंशति

4+20=24 - चतुर्विंशतिः

5+20=25 - पञ्चविंशति

6+20=26 - षड्विंशति

7+20=27 - सप्तविंशति

8+20=28 - अष्टविंशति

1+30=29 - स्कोनत्रिंशत्

30 - त्रिंशत्

- ① कर्ता कारक - ने
- ② कर्मकारक - को
- ③ करण कारक - से, द्वारा (साहचर्येण)
- ④ सम्प्रदान कारक - को, के लिए
- ⑤ अपादान कारक - से (छुड़ाई या अलग होना)
- ⑥ सम्बन्ध कारक - का, की, के, ना, ती, ने, रा, री, रे
- ⑦ अधिकरण कारक - में, पर

- + सः गच्छति। वृद्ध जाता है।
- रामः रावणं हतवान्। (राम ने रावण को मारा)
- रामः वाणेन रावणं हतः। (राम ने वाण से रावण को मारा)
- वृक्षान् पत्राणि गतानि। (वृक्ष से पत्ते गिते हैं)
- सः मोदकस्य हस्तगतः। (बट मिठाई के लिए बाजार गया)
- वृषस्य पुत्रः अघ्नतः। (राजा का पुत्र बघा।)
- वृष्टेः वानराः निवसन्ति। (वृष्ट पर वन्दर रहते हैं।)

संस्कृत (साहित्य)

① रामायण - वाल्मीकि - 7 कंड हैं

- बालकंड (राम के वचपन के बारे में)
- अयोध्याकंड (राम का विवाह, बनवास मांगे जाने की कथा)
- अरण्यकंड (राम का जंगल में जीवन, सीता हरण)
- किशकिन्ध्या कंड (सीता की हत्या में राम पहुँचे दुःसम्भ से)
- सुन्दरकंड (लंका की ओर प्रस्थान, विभीषण से मुलाकात)
- लंका कंडा युद्धकंड (सीता को रावण की कैद से मुलाकात)
- उत्तरकंड (राम की राजपोषी, सीता की अग्निपरीक्षा)
- (सीता का जन्म में समाजवादी, राम की जल सत्राधि)

महाभारत - (महर्षि व्यास)

- ① युद्ध चला - 18 दिन
- ② भीष्म का मूल नाम - दैवव्रत
- ③ अश्वत्थामा की माँ - कृपि
- ④ गीता में 'मैं' शब्द का प्रयोग - 109 बार
- ⑤ अभिमन्यु के पुत्र का नाम - परीक्षित
- ⑥ शकुनी के राज्य का नाम - गांधार
- ⑦ बलराम की पत्नी - रेवती
- ⑧ पाण्डवों की ओर से बड़े बाला कौरव - युयुत्सु
- ⑨ कर्ण के सारथी का नाम - शल्य
- ⑩ चक्रवर्ती की रक्षा की - श्रेणाचार्य
- ⑪ कृष्ण किसका नाम था - द्रोपदी
- ⑫ अर्जुन की पत्नी - उलूपी व चित्रांगदा
- ⑬ महाभारत में पर्वों की संख्या - 18
- ⑭ द्रोणच की माँ - हिडिम्बा (पतिभीम)
- ⑮ अर्जुन के धनुष का नाम - गांडीव
- ⑯ भीम ने किस राक्षस को मारा - अश्वत्थामा (स्वर्णकाय)

- ① भीष्म ने युद्ध किया - 101 दिन
- ② युधिष्ठिर के स्वर्ग जाने पर साग्र गया - कुला
- ③ केक किसका नाम था - युधिष्ठिर का
- ④ कर्तिकेय का वाहन - मोर, पार्थ - अर्जुन को
- ⑤ श्रेणाचार्य का वध हुआ - 15 वें दिन
- ⑥ संकषेप किसका नाम था - बलराम
- ⑦ महाभारत में सती हुई - माद्री
- ⑧ कुल श्लोक - एक लाख
- ⑨ अभिमन्यु की पत्नी - उत्तरा
- ⑩ दुर्भीक्ष्ण किसी अश्विनी सेना का स्वामी था - 11
- ⑪ वृष्णा की पत्नीय वेदी कहते - कुकसेन को
- ⑫ भीष्म सरलैया के अक्ष हुए - 10 वें दिन
- ⑬ अर्जुन को नपुंसक होने का श्राप दिया - उर्वशी
- ⑭ कीचक वध किस पर्व के काल - विराट पर्व

① श्री कृष्ण ने किस दिन शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा की लोड़ा - 9 वें दिन

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (कालिदास का प्रसिद्ध नाटक)
इसमें राजा दुष्यंत और शकुन्तला की कहानी है

पेज नं० ④

पुत्र - दुष्यंत

संस्कृत साहित्य प्रश्नोत्तर

- ① नचिकेता की कहानी किस उपनिषद् में - ऊडोपनिषद् में
- ② संस्कृत व्याकरण के मुख्य रचयिता - महर्षि पाणिनी (अष्टाध्यायी, संस्कृत व्याकरण का प्रमुख ग्रंथ है)
- ③ नीतिशतक, शृंगारशतक, वैराग्यशतक की रचना किसकी - भर्तृहरि ने।
- ④ न्याय दर्शन के प्रणेता - महर्षि गौतम जिन्होंने न्यायसूत्रों की भी रचना की।

रचनाएं - रचनाकार

- * भगवद्गीता, महाभारत - वेदव्यास
- * रघुवंशम्, कुमारसंभवम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मेघदूतम्, मालविकाग्निमित्रम्, ऋतुसंहार
विजयमोक्षायिक → कालिदास
- * बृहत्चरितम्, सौन्दरनन्दम् - अश्वघोष
- * मुद्राराक्षस - विशाखदत्त
- * हर्षचरितम्, चण्डीशतकम्, कादम्बरी → वाणभट्ट
- * प्रियदर्शिका, नागावतः → हर्षवर्द्धन
- * नैषधीयचरितम्, रत्नावली → श्री हर्ष
- * दशकुमारचरितम्, अवन्तीसुन्दरी - दण्डी
- * उत्तररामचरितम्, मालतीमाधव - भवभूति
- * महाभारत → पतंजलि
- * मुग्धबोध, लघुसिंहाट कौमुदी → बट्टराज
- * अर्थशास्त्र → कौटिल्य
- * काव्यमीमांसा → राजशेखर
- * काव्य प्रकाश → मम्मट
- * मृच्छकटिकम् - शूद्रक
- * पंचतन्त्र → विष्णुशर्मा
- * चन्द्रलेखा - कदम्बर
- * कीर्ति कौमुदी - सोमेश्वर
- * राजतरंगिणी - कल्हण
- * गीतगोविन्द - जयदेव
- * नाट्यशास्त्र - भरतमुनि

- मनुस्मृति → मनु
- हंसदूतम् → कपिलेश्वर
- काव्यालंकार - भामह
- स्वल्पदशानन - भीमट
- श्रौतसूत्रम् - कात्यायन
- छिन्नुपाख्यान - माघ
- कर्पूर मञ्जरी - राजशेखर
- कल्पसूत्र - भद्रबाहु
- चौरपंचांग, विष्णुसंस्कृतदेवचरित - बिल्हण
- हितोपदेश → नारदण पाण्डित
- वृत्तकथा - गुणादय
- साहित्यदर्पण - विश्वनाथ

By. Mohit Jaiswal

Finished

संस्कृत (पर्यायवाचीशब्द)

(विलोमशब्द) पेज नं०-5

- ① देवता - अमरः, निर्जरः, देवः, सुरः, आदित्यः
- ② असुरः - दैत्यः, दनुजः, इन्द्रादि दानवः, राक्षसः
- ③ ब्रह्मा - आत्मभूः, सुरज्येष्ठः, पितामहः, हिरण्यगर्भः
- ④ विष्णु - नारायणः, दामोदर, गोविन्दः, गरुडह्वज
- ⑤ कामदेवः - मदनः, मन्मथः, मारः, प्रद्युम्न, कन्दर्प
- ⑥ लक्ष्मी - पद्मालयः, पद्मा, कम्पला, श्री, हरिप्रिया
- ⑦ शिव - शङ्ख, पञ्चुपति, महेश्वर, शंकरः, चन्द्रसौधरः
- ⑧ पार्वती - उमा, कल्यायनी, गौरी, हम्बती, शिवा, भवानी
- ⑨ गणेशः - विनायकः, गणाधिपः, स्कन्द, लम्बोदरः, गजाननः
- ⑩ इन्द्र - मरुत्ववान्, पञ्चबा, पुरन्दरः, वासवः, सुरपतिः
- ⑪ अमृत - पीयूषम्, सुधा, अमिय
- ⑫ अग्नि - वैश्वानरः, बहिनः, धन्वज्यः, जालवेदः, पाकः
- ⑬ वायुः - गन्धबाहः, अनिलः, समीरः, भाकतः, समीरण, पवनः
- ⑭ कुबेरः - यमराट्, धनदः, किन्नरदेशः, नरवाहनः, भीदः
- ⑮ आकाशः - व्योम, पुष्कर, अम्बर, गगन, अनन्त
- ⑯ मेघः - बारिबाहः, बलाहकः, धाराधरः, जलधरः, धनः
- ⑰ विजली - शम्पा, स्फुरती, क्षणप्रभा, तडित्, पंचला, विद्युत्
- ⑱ चन्द्रमा - हिमंशु, चन्द्रः, विद्युः, सुधांशु, मृगश्रु, शशाधारः
- ⑲ चौदनी - चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी
- ⑳ सूर्यः - सूरः, आदित्यः, उभाकरः, भानु, सविता
- ㉑ किरण - रश्मि, करः, उष, धृष्टि, मरीचि
- ㉒ दिवसः - द्यौः, दिनम्, अहन्, वासरः
- ㉓ रात - शर्वरी, मिशा, रात्रि, भण्डा, विभावरी, रजनी
- ㉔ सरस्वती - वाणी, ब्राह्मी, भारती, भाषा, गी, वाक्
- ㉕ ओष - कोपः, अमर्षः, रोषः, प्रतिष्ठा
- ㉖ जेल - कौतूहल, कौतुक, कुतूह, कुतूहलम्
- ㉗ सौप - सर्पः, भुजंगः, अडि, विषधरः, चडी, व्याल
- ㉘ समुद्र - सिन्धुः, पारावारः, रत्नाकरः, सागरः
- ㉙ पानी - वारि, सजिल, जलम्, पय, जीक, उदक, रोप
- ㉚ मल्ली - मेष, मीन, मत्स्य, मंडज, विसा, शकुली
- ㉛ नदी - तटिनी, शौवालिनी, निम्नगा, आपणा, सरिता
- ㉜ गंगा - विष्णुपदी, जह्नुतनया, भागीरथी, त्रिपथगा
- ㉝ यमुना - काळिन्दी, मयतनया, समनस्वसा
- ㉞ कमल - रापीब, पुष्कर, सरसीमह, अरविन्द, जलज
- ㉟ कम्पल - रापीब, पुष्कर, सरसीमह, अरविन्द, जलज

- उन्नति - अवनति
- अल्प - बहुल
- अपेक्षा - अपेक्षा
- अज्ञ - विज्ञ
- अनुग्रह - विग्रह
- आर्द्र - शुष्क
- अनुलोमः - प्रतिलोमः
- अग्र - पश्च
- अमृतम् - विषम्
- अर्पण - गृहण
- अल्पायु - दीर्घायु
- अनुजः - अग्रजः
- अध - इति
- अतिवृष्टिः - अनावृष्टिः
- अवनि - अम्बर
- असंख्यः - संख्यः
- अनिवार्य - वैकल्पिक
- उत्कर्ष - अचर्ष
- आकीर्ण - विकीर्ण
- अत्यधिक - स्वल्प
- अमिष - निरामिष
- अंगीकार - अस्वीकार
- अपकार - उपकार
- अत्र - तत्र
- अद्य - उपरि
- आत्मा - अवसा
- इश्वरः - अनीश्वरः
- सम्य - असम्य
- रक्षेत्स्वर्गादः - वदुदेवतादः
- करुणः - निष्करुणः
- गौरव - लाघव
- शोधन - पोषण
- ग्रास - मोक्ष
- ज्योति - तम
- भुद्र - महान्
- ज्योत्स्ना - रमिता
- तामासिक - सात्विक
- तिम्ब - मधुर
- दृषा - दृष्टि
- दीर्घायु - कृशायु
- मुञ्च - पृच्छ

- दृष्टः - पुरस्कारः
- दुःशील - सुशील
- धृष्टः - विनीतः
- दुर्गति - मङ्गति
- निशीघ्र - मर्यादित
- प्रत्यक्षतः - परोक्षतः
- पाण्डितः - मूर्खः
- प्रज्ञः - मूढः
- उत्तम - अधम
- उन्मीलन - निमीलन
- सान्निध्य - विग्रह
- उत्पन्न - निपतन
- मृदु - कठ
- कुत्सा - स्तुति
- गुरु - लघु
- गुणवान् - गुणातीत
- चिन्मय - जड
- तीक्ष्ण - दुर्बल
- देवः - दानवः
- निंद्य - बंद्य
- नारायणः - नरोत्तमः
- निर्लज्ज - सज्ज
- प्रवृत्ति - निवृत्ति
- पृष्ठ - तटु
- प्रलयः - सृष्टि
- प्रातः - सायम्
- प्रदोषः - प्रत्युषः
- प्रभु - श्वत्यः
- वसः - मुक्तः
- मृग - मृग
- यमार्थः - कल्पितः
- व्यतिष्ठ - सम्मिष्ट
- विपुल - न्यून
- स्वनीया - परकीया
- प्रकृत - मूलान
- प्रकट - प्रच्छन्न
- भती - भार्या
- यौवन - वार्धक्य
- विपद् - सम्पद्
- स्वासः - प्रश्नासः
- शुक्लः - कृष्णः
- मुखर - तृणानि

लेकार - (काल)

संस्कृत में लकार के 10 प्रकार हैं। क्रिया को धातु कहते हैं।

(8)

धातुएं 10 भागों में बंटी हैं

व्यक्तियों के तीन पुरुष हैं
प्रथम मध्यम उत्तम

प्रत्येक पुरुष के तीन वचन होते हैं
एक द्विवचन बहुवचन

प्रत्येक लकार में 10 रूप होते हैं

- ① लट् लकार (वर्तमान Present)
- ② लृट् लकार (भूत Past)
- ③ लुट् लकार (भविष्यत् Ist)
- ④ लृट् लकार (भविष्यत् IInd)
- ⑤ विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में)
- ⑥ लोट् लकार (आज्ञावाची)
- ⑦ लृट् लकार (हेतुमद्भूत)
- ⑧ आशीलिङ् लकार (आशीर्वाद देने)
- ⑨ लिट् लकार (Past Perfect) (परोक्ष भूत)
- ⑩ लुङ् लकार (Imperfect)

भव् (होना) लट् लकार

भवति भवतः भवन्ति
भवसि भवथः भवथ
भवामि भवावः भवामः

लोट (अज्ञा/आज्ञावाची)

भवतु भवेताम् भवन्तु
भव भवतुम् भवत
भवामि भवाव भवाम

लृट् (अनद्यतन भूत)

अभवत् अभवताम् अभवन्
अभवः अभवतम् अभवत्
अभवम् अभावः अभवाम

लृट् (भविष्यत्)

भविष्यति भविष्यतः भविष्यन्ति
भविष्यसि भविष्यथः भविष्यथ
भविष्यामि भविष्यावः भविष्यामः

विधी लिङ्

भवेत् भवेताम् भवेयुः
भवेः भवेतम् भवेत्
भवेयम् भवेव भवेम

लिट् (परोक्ष भूत)

वभूव वभूवतुः वभूवुः
वभूविष " वभूव
वभूव वभूविष वभूविम

मोहित लिट् लकार

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीय	तम्	तौ	तान्
तृतीया	ते	तभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	"	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	"	"
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	"	तेषु

देव

प्रथमा	देवः	देवौ	देवाः
द्वितीय	देवम्	देवौ	देवान्
तृतीया	देवेन	देवाभ्याम्	देवैः
चतुर्थी	देवाय	"	देवेभ्यः
पंचमी	देवात्	"	देवेभ्यः
षष्ठी	देवस्य	देवयोः	देवानाम्
सप्तमी	देवे	देवयोः	देवेषु

इसी तरह से वाजक, राम, ब्रह्म, सूर्य, सुर, असुर, मातृ, अश्व, गज, भक्ष्य, हाथ, शिष्य, दिक्, अम्, आदि के बनेंगे।

मुनि-

मुनिः	मुनी	मुनयः
मुनिम्	मुनी	मुतीन्
मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
मुनये	"	मुनिभ्यः
मुनेः	"	"
मुनेः	मुनयोः	मुनीनाम्
मुनौ	मुन्योः	मुनिषु

इसी तरह - ऋषि, हरि, रवि आदि के बनेंगे

पति -

पतिः	पती	पतयः
पतिम्	पती	पतीन्
पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
पत्ये	"	पतिभ्यः
पत्युः	"	पतिभ्यः
"	पत्योः	पतीनाम्
पत्यौ	पत्योः	पतिषु

इसी तरह गणपति, भूपति, नरपति आदि के बनेंगे।

पितृ (पिता)

(विभक्ति)	प्रथम -	द्विचक	द्विचक	वहुवचक
	पिता	पितरौ	पितरः	
द्वितीया -	पितरम्	"	पितॄन्	
तृतीया -	पित्रा	पितृभ्याम्	पितॄभिः	
चतुर्थी -	पित्रे	"	पितॄभ्यः	
पञ्चमी -	पितुः	"	"	
षष्ठी -	पितुः	पित्रौः	पितॄणाम्	
सप्तमी -	पितरि	पित्रोः	पितॄषु	

इसी तरह, भ्रातृ, जामातृ, देव आदि के होंगे।

साधु

पेयनः (४)

सम्बन्ध	द्विचक	वहुवचक
साधुः	साधू	साधवः
साधुम्	साधू	साधून्
साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
साधवे	"	साधुभ्यः
साधोः	"	"
साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
साधौ	साध्वोः	साधूषु

इसी तरह, भ्रातृ, भ्रातृ, भ्रातृ, वन्यु, विष्णु, वायु का बनेगा।

मातृ (माता)

	<u>मातृ (माता)</u>	<u>सम्बन्धक</u>	<u>द्विचक</u>	<u>बहुवचक</u>
(विभक्ति)	प्रथम	माता	मातरौ	मातरः
	द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
	तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
	चतुर्थी	मात्रे	"	"
	पंचमी	मातुः	"	"
	षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
	सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु

अस्मद् (मैं/हम लोग)

अहम्	आवाम्	वयम्
माम्	आवाम्	अस्मान्
मया	आवाम्भ्याम्	अस्माभिः
मह्यम्	"	अस्मभ्यः
मतः	"	अस्मत्
मम्	आवयोः	अस्माकम्
मयि	आवयोः	अस्मासु

मधु (शह)

मधु	मधुरी	मधूनि
मधुम्	मधुरी	मधूनि
मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
मधुने	"	मधुभ्यः
मधुनः	"	"
मधुनः	मधुरोः	मधूनाम्
मधुनि	मधुरोः	मधूषु

युस्मद् (तुम)

त्वम्	युवाम्	युयम्
त्वाम्	युवाम्	युयान्
त्वया	युवाभ्याम्	युयभिः
तुभ्यम्	"	युयभ्यः
त्वत्	"	युयम्
तव	युवयोः	युयकम्
त्वयि	युवयोः	युयसु

नदी -

नदी	नद्यौ	नद्यः
नदीम्	नद्यौ	नदीन्
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
नद्यै	"	नदीभ्यः
नद्याः	"	"
नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
नद्याम्	नद्योः	नदीषु

Dr. Mohd. Faraz

संस्कृत में समास ^{विभिन्न} प्रकार के होते हैं।

① अव्ययीभाव - पूर्व पद अव्यय होता है तथा पूर्व पद की प्रधानता होती।

जैसे - प्रत्यग्नि = अग्नि प्रति
यथाज्ञानम् = ज्ञानमनतिष्ठम्

② तत्पुरुष - इसमें उत्तरपद प्रधान होता है।

जैसे - ज्ञानहीनः = ज्ञानेन हीनः
भूतबलिः = भूताय बलिः

③ कर्मधारय - इसमें विशेष्य / विशेषण होता है।

जैसे - नीलकमल = नीलम् कमलम्
मधुरवचन = मधुरम् वचनम्

④ द्विगु - पहला पद संख्या बोधक होता।

जैसे - पंचवटी = पंचवाना वटानां समाहारः
त्रिलोक = त्रयाणां लोकानां समाहारः

⑤ बहुव्रीहि - इसमें किसी अन्य तीसरे पद की प्रधानता होती।

जैसे - लम्बोदर = लम्बं उदरं यस्य सः
दिगम्बर = दिक् अंबरं यस्य सः

संधि
संस्कृत में भी तीन प्रकार की होती हैं।

स्वर (अच्) व्यंजन (हल्) विसर्ग

* संस्कृत में स्वरसंधि को अच् कहते।

* व्यंजन को हल् संधि कहते हैं।

* अच् (स्वर) संधि के 5 भाग हैं।

→ अकः सर्वा दीर्घः (दीर्घसंधि)

→ आदगुणः (गुणसंधि)

→ वृद्धिरोचि (वृद्धिसंधि)

→ इक्रीयणाचि (यणसंधि)

→ अचौडधवायावः (अयादिसंधि)

कृष्ण - दोनों पद प्रधान होते हैं।

जैसे - रामकृष्णौ = रामश्च कृष्णश्च
सुखदुःखे = सुखं च दुःखं च

संस्कृत उपसर्ग

⇒ उपसर्गों की संख्या - 22 हैं।

- 1- प्र ⇒ प्रतिष्ठति, प्रभवति
- 2- परा - पराभवति, पराजयते
- 3- अप - अपहरति, अपनयति
- 4- सम - संगच्छते, संश्लेषते
- 5- अनु - अनुभवति, अनुवर्तते
- 6- अव - अवरोहति, अवगच्छति
- 7- निस् - निश्चिनोति
- 8- निर - निरयते, निष्क्रामति, निरीक्षते
- 9- दुस् - दुश्चरति, दुष्करोति, दुष्यते
- 10- दुर् - दुर्वर्त्ति, दुर्गच्छति
- 11- वि - विचरति
- 12- आ - आरोहति
- 13- नि - निदिशति, निषीदति, निगृह्णाति
- 14- आधि - आधिगच्छति, आध्यसः
- 15- अपि - अपिद्यते
- 16- अलि - अलिशते, अत्येति
- 17- सु - सुकरोति
- 18- उत् - उत्पत्ति, उत्तिष्ठति
- 19- आभि - अभिमन्यते
- 20- प्रति - प्रतिवदति, प्रतीक्षते
- 21- परि - परिवर्तते
- 22- उप - उपादिशति

- प्रत्यय -

Page No. 10

मुख्यतः 5 प्रकार के होते हैं।

प्रत्यय - जो शब्दांश किसी शब्द के अन्त के जुड़कर अर्थ बदल दे।

→ सुप्, लिट्, कृत, तद्धित, स्त्री

धातु (छिमा)
में जुड़ते

संज्ञा, लिंगान्तर,
विशेषण में जुड़ते।

प्रत्यय

निर्मित शब्द

- ① तद्ध - पाठितव्यम्, गन्तव्यम्
- ② अनीय - भवनीय, पठनीय
- ③ क्त - ज्ञातः, हिनः, पम्बः
- ④ क्तवन् - गतवान्
- ⑤ क्त्वा - गत्वा, दृष्ट्वा, विध्वा
- ⑥ ल्यप् - अवगम्य, संदृश्य, सम्पीय
- ⑦ शतृ - गच्छतु, पचतु, आकर्णयन् असन्, गृह्णतु
- ⑧ शानच् - यजमानः, लक्ष्मणः, कुर्वाणः
- ⑨ तुमुन् - कर्तुम् (अन्त में तुम् लगावे)
- ⑩ ण्वल् - पाठकः, लेखकः, नायकः (करने वाला हो) : लगव्
- ⑪ लृच् - पाठिता, कम्ता, (करने वाला हो) - ण की मात्रा ध्वनि
- ⑫ ल्युट् - पठनम्, मरणम् (अन्त में नम् लगावे)
- ⑬ क्तिन् - गतिः, नीतिः (अन्त में तिः लगावे)
- ⑭ अण् - मानवः, पाण्डवः (सन्ताने हो) या होने वाला हो
- ⑮ मुतुप् - श्रीमान्, बलवान् (वान्, मान् लगावे)
- ⑯ टाप् - बाला, लेखिका, गायिका (स्त्री टव्)

उपसर्ग - जो शब्दांश किसी शब्द के प्रारम्भ में जुड़कर उसका अर्थ बदल देता है।

⑮ मुतुप् - श्रीमान्, बलवान् (वान्, मान् लगावे)
⑯ टाप् - बाला, लेखिका, गायिका (स्त्री टव्)